श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय किशनगढ़

नागरी

ई-पत्रिका

सत्र २०१७-२०१८

प्राचार्य एवं संरक्षक

डॉ. सहदेव दान बारहठ

सम्पादक-मण्डल

डॉ. सत्यदेव सिंह

डॉ. शिवदत्त कविया

डॉ. सरोज मालपानी

डॉ. ज्योति भाटिया

डॉ. उमा बारैठ

डॉ. अलका जैन

श्री भुवनेश कुमार परिहार

डिस्क्लेमर:- नागरी ई-पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विषय-सामग्री की मौलिकता, इसमें अभिव्यक्त विचार, मत एवं दृष्टिकोण के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है.

प्राचार्य सन्देश

भारतीय मनीषियों ने युवा अवस्था को शिक्षा ग्रहण करने की अवस्था माना है. यह जीवन के वसंत की अवस्था है, भरपूर ऊर्जस्वित और स्वप्न पूरित. प्रत्येक युवा अपनी अक्षय उर्जा शक्ति से नव सर्जन और नवाचार की क्षमता रखता है. नागरी पत्रिका विद्यार्थियों की इस सर्जनात्मक ऊर्जा को आयाम देने की दिशा में एक कदम है. नागरीदास की नगरी किशनगढ़ सांस्कृतिक वैभव की प्रतीक रही है. भक्ति, नीति और माधुर्य का त्रिवेणी संगम यहाँ उपस्थित रहा है. इस पत्रिका का नाम 'नागरी' भी इसी पृष्ठभूमि की ओर संकेत है. बहरहाल नयी तकनीक के साथ कदम-ताल मिलाते हुए और हृदय में पर्यावरण संरक्षण का भाव संजोते हुए, 'नागरी' को अब ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. महाविद्यालय का यह लघु नवाचार, आशा है आपको सुखद अनुभूति देगा. इस पत्रिका के लिए अपनी रचना देने के लिए रचनाकारों का साधुवाद करता हूँ. मुझे विश्वास है कि 'नागरी' का यह इलेक्ट्रॉनिक अंक नए रचनाकारों को भी प्रेरणा देगा.

डॉ. सहदेव दान बारहठ

प्राचार्य

अनुक्रमणिका

१. *बेटियाँ*	– कार्तिक टेलर	5
२. *जीवन*	– कार्तिक टेलर	6
३. *माँ एक आस है*	– प्रतीक सैनी	7
४. *जागो*	– डॉ अलका पारीक	8
५. *मैं नदी*	शिवराज गुर्जर	9
६. *भारतीय संस्कृति के संवाहक मानवतावादी गाँधी*	– डॉ.चन्द्रप्रभा पारीक	10
७. *साइन्स*	– जितेन्द्र वर्मा	11
८. *फागुन*	– श्रीमती अलका जैन	12
९. *संसार का सार है माँ*	– प्रतीक सैनी	13
१०. *नीति*	– डॉ. उमा बारैठ	14
११. *विलियम्स शेक्सपीयर के वचन*	– विनिता सैन	15
१२. **हम पंछी**	**-- प्रियंका जांगिड**	**16**
13. वो	**-- प्रियंका जांगिड**	**17**
14. विद्याया: महत्त्वम्	**-- वन्दना पारीक**	**18**
15. छात्राणाम् कर्त्तव्यानि	**-- मोनिका पारीक**	**22**
16. संस्कृत छंद संकलन	*-- भावना यादव*	*24*
17. मैं विज्ञान हूँ	*-- राधिका शर्मा*	*26*
१८. **स्टीफेन हाकिंग**	– डॉ अलका पारीक	**27**

बेटियाँ

कार्तिक टेलर
बी.ए. भाग-प्रथम

जीवन की संरचना है बेटियाँ
जीवन की साधना है बेटियाँ
मिलने वाला प्रेम है बेटियाँ
हर उम्मीद की किरण है बेटियाँ
हर पिता का सहारा है बेटियाँ
हर भाई की इज्जत है बेटियाँ
हर माँ की शान्ति है बेटियाँ
हर दुःख में खुशी है बेटियाँ
हर नियम को निभाती है बेटियाँ
हर अक्षम में सक्षम है बेटियाँ
हर नदी का किनारा है बेटियाँ
हर क्रोध में धैर्य है बेटियाँ
शीतल जल की तरह है बेटियाँ
कठोर पत्थर की तरह चमकती है बेटियाँ
हर काम का अन्त है बेटियाँ
हर कर्म का पुण्य है बेटियाँ
हर परिवार की रंगोली है बेटियाँ
हर समाज का अस्तित्व है बेटियाँ

जीवन

कार्तिक टेलर
बी.ए. भाग-प्रथम

इस दुश्मन का क्या है दोष
बेचारे का जीवन हो गया बेहोश
जब ठण्डी बूंद मिलती थी
तो वो भी अमृत-सी लगती थी
अब नहीं कहीं वो बूंद है दिखती
जीवन की कलियाँ सूखी ही लगती
खून की इक-इक बूंद न टिकती
दिखी बेचारे को मौत भी बिकती
क्या करे अब दान - दक्षिणा
घर में जब कोड़ी भी ना टिकती
मगर अब टिकता है उसका धंधा
क्यों ? अब चलता है उसका डंडा
सेठ साहूकार की एक ना चलती
अब चलती है सिर्फ गुंडागर्दी
नहीं चली जब गुडांगर्दी
सभी ने पहनी सफेद वर्दी
हर हफ्ते तो हफ्ता लाता
नही किसी का अब दु:ख भाता

माँ एक आस है

प्रतीक सैनी
बी.एससी. भाग-प्रथम
प्राणिशास्त्र

माँ प्यार है
जीवन का आधार है
माँ उल्लास है
खुशी है, प्रेम है
जीवन की उमंग है
ममता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है
माँ प्यार है
जीवन का आधार है
माँ पवन, निर्मल, कोमल है
त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति है
माँ एक आस है
तपते रेगिस्तान में छाँव का अहसास है
शस्य, श्यामला-सी विशाल हृदया, वसुन्धरा है
माँ का आँचल सुख का सागर है
जो दामन थाम ले
पार कर जाता भवसागर है
माँ प्यार है
जीवन का आधार है ।

जागो

डॉ अलका पारीक
ऐसोसिएट प्रोफेसर
प्राणिशास्त्र

जागो जागो, अब तो जागो
देखो सूरज चमक रहा है
चिड़िया गीत सुनाती है
कंचन जंगा की चोटी भी
मंद मंद मुस्काती है।
शीतल पवन बाँसुरी छेड़े
पत्ती भी सुर मे गाती है।
जागो जागो, अब तो जागो
तुम खोये खोये दिखते हो
या सोए सोए जागे हो
आगे क्या होगा सोचे हो
या भूतकाल में रहते हो ?
अभी कहां पर बैठे हो
या आगे पीछे ही दिखता है
जागो जागो, अब तो जागो
तुम कानों से सुनते हो
या वो तुमको सुनवाते हैं
आँखों से तुम देखे हो
या वो तुम को दिखलाते हैं
तुम फिरते हो जागे जागे
या जागे जागे भी सोते हो
जागो जागो, अब तो जागो
तुम असली हीरा हो अन्दर से
सीधे सच्चे और सरल हो
सुख शान्ति प्रेम का सागर हो
भीतलता की गागर हो
तुम राजा हो अपने तन के
सोये हो इसलिए खोये हो
जागो जागो अब तो जागो
तुम छिपे कहाँ हो अन्तर में
क्या अपने को पहचाना है
कौन हो ? क्या हो ? क्यूँ आये हो ?
क्या इस राज को जाना है ?
कब तक रहना है इस जग में
संसार मुसाफिरखाना है.....
जागो जागो अब तो जागो।

मैं नदी

शिवराज गुर्जर
बी.एससी. भाग-तृतीय

धीरे धीरे सूखती गई मैं
इस धरा की सुन्दरता में चार चाँद लगाया करती थी।
मेहनती किसानों से
रूठती गई मैं।
अब मेरा नाम मात्र रह गया है।
लोभी मानव मेरा उत्खनन कर रहा है
भूखे बैठे किसान मर रहे हैं और
लोग कहते हैं
आज जहाँ गंगा के घाट संवर रहे हैं
हर रोज सूखती जा रही हूँ
ऐ इन्सानों
अब तो सदुपयोग कर लो
आपके हाथों मैं रोज मरती जा रही हूँ
ओ, मेरा नाम नहीं बताया मैंने।
हाँ, सुन लो।
मेरी रग-रग में आज औद्योगिक उद्योग चल रहे हैं
सूख गई हूँ मैं फिर भी
मेरी वजह से लोग पल रहे है।
धीरे-धीरे छोटे-छोटे झरनों से
मिलकर बनती हूँ मैं
फिर छोटे-छोटे भागों में बंटकर
उजड़ती हूँ मैं
आखिर क्या कसूर है मेरा
कहाँ-कहाँ से पानी लाती हूँ और
आप को पिलाती हूँ
अब दूर नहीं वो पल
जब मेरे अन्दर तुम्हारे कब्र, और श्मशान बनाये जायेंगे
फिर हरिद्वार मक्का जाने की जरूरत नहीं होगी।
अस्थियां खुद-ब-खुद बहा ले जाऊंगी
मैं आपकी कन्या समान इतनी दूर से आई हूँ
इतना सुन्दर मेरा रूप है।
हजारों करवटें मैं लेती हूँ।
शायद ही रूपवती, पद्मावती ले सकती थी।
आखिर क्यों खुद को मिटाने के बहाने
मेरी नसें काट रहे हो
में सजीव हूँ बदला लूँगी
आने दो बरसात का मौसम
कस्बे के कस्बे मिटा दूँगी।
मुझे मिटाने की कोशिश है-तुम्हारी
पर हजारो पर्वत उजाड़े हैं मैंने
ऐसा उजाड़ दूँगी कि
सदियाँ लग जायेंगी
तुम्हें अपनी झोपड़ियाँ बनाने में।
और फिर भी मैं नदी ही कहलाऊँगी।

भारतीय संस्कृति के संवाहक मानवतावादी गाँधी

डॉ.चन्द्रप्रभा पारीक
ऐसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास

भारतीय सांस्कृतिक मूल्य जिनके जीवन के थे आधार
सत्य, अहिंसा, त्याग प्रेम का मिलता हमें जहाँ विस्तार
ऐसे पुण्य पुरुष गाँधी ने राम सदृश धरकर अवतार
समतावादी दृष्टि रखकर मानवता का किया प्रचार।

महात्मा गाँधी का चिन्तन भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं से ही पोषित एवं पल्लवित हुआ। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, जैन व बौद्ध धर्म का उनके व्यक्तित्व निर्माण में गहरा प्रभाव था। गाँधी का मानना था कि "निराशा और असफलता के बीच जब सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार नजर आता है, केवल भगवद्गीता ही उनके लिए प्रकाश पुंज रही है।"

गाँधीजी के विचार और लक्ष्य सम्पूर्ण मानवता के लिए थे इसीलिए सत्य, अहिंसा, नैतिकता, मानवता, त्याग प्रेम, कष्ट सहने की शक्ति, आत्मविश्वास और सहायता उनके आधार थे। उनका कहना था कि हमें विचारों शब्दों और कार्यो से अहिंसा का पालन करना चाहिए हमें दण्ड के स्थान पर माफ करना चाहिए।

राजनीति में अध्यात्मवाद को सम्मिलित करना तथा प्रेम और अहिंसा के सिद्धांत को लाना, मनुष्य की समानता और भ्रातृत्व में विश्वास, स्त्री शिक्षा व समानता अछूतोद्धार, जाति रंग भेदों का नारा, शिक्षा आदि पर बल देकर-भारतीय समाज के ढ़ॉचे को बदलने में उन्होंने महती भूमिका निभाई।

इस प्रकार गाँधीजी ने देश के राष्ट्रीय जीवन में राजनीतिक समस्याओं के समाधान के साथ मानवता के विकास में व्यापक आधार पर सत्य और अहिंसा के प्रयोग का परीक्षण, किया। गाँधी के मानवतावादी विचार न केवल भारत अपितु समस्त मानवता को एक अनूठी देन है।

डॉ.होम्स ने लिखा है-

"महात्मागाँधी गौतम बुद्ध के पश्चात के समय के सबसे महान भारतीय और ईसा मसीह के पश्चात संसार के सबसे महान् व्यक्ति थे।"

साइन्स

जितेन्द्र वर्मा
बी. एस सी. भाग-तृतीय

ये जो मोटर, स्कूटर से लेकर कार हैं,
ये जो बम से लेकर बड़े-बड़े परमाणु हथियार हैं,
यह सब साइंस का ही आविष्कार हैं।
ये जो आजकल के युवा करते 'सोशल मीडिया' पर आँखे अपनी चार हैं,
अगर कुछ भी हो जानना तो गूगल बताने को तैयार है,
होता आजकल सब काम मोबाइल पर, नहीं लगती बैंकों मे कतार है।
हाँ, यह सब भी तो साइंस का ही आविष्कार है।
हजारों आदमियों का काम कर लेता एक मशीनी औजार है,
अब हो रहा इंसान बेकार, और घट रहा रोजगार है,
पर यह औजार भी तो साइंस का ही आविष्कार है।
ये जो जहाज, हेलीकॉप्टर से लेकर प्लेन हैं,
ये जो रेल, मेट्रो से लेकर ट्रेन हैं,
यह सब साइंस की ही देन है।
ये जो ट्रक, जेसीबी से लेकर क्रेन हैं,
सच तो यह है कि रोबोट जैसी मशीनरी में भी ब्रेन है,
हाँ, यह सब भी तो साइंस का आविष्कार है।
अगर पढ़ते-पढ़ते कुछ भूल गए तुम, तो पूछो कम्प्यूटर, लेपटॉप से उन्हें सब याद है,
हाँ, यह सब भी तो साइंस का आविष्कार है।
इंटरनेट के जरिये अब हो रही रिश्ते-नातों की बात है,
अब हो रही ऑनलाइन ही मुलाकात है
हाँ, यह सब भी तो साइंस की ही करामात है।
करके परमाणु हमले जैसा घिनौना कृत्य, अमेरिका अब भी सो रहा है,
हिरोशिमा और नागासाकी आज भी खून के आँसू रो रहा है,
हाँ, यह सब भी तो साइंस की वजह से हो रहा है।
प्रदूषण रोकथाम का पैमाना इस बार भी 'लो' (स्लू) रहा
मानव धीरे-धीरे अपनी प्रकृति खो रहा
हाँ, यह सब भी तो साइंस की वजह से हो रहा
ये जो कभी दिल्ली में चारों तरफ धूल-धुआँ का पहर है,
यह जो हवा मे भी घुला जहर है,
हाँ, यह सब भी तो साइंस का ही कहर है।
अब चारो ओर फैल रही केवल तकनीकी लहर है
पर्यावरण प्रदूषण से जूझ रहा, दुनियाँ का हर छोटा बड़ा शहर है,
हाँ, यह सब भी तो साइंस का ही कहर है।
पढ़कर वैज्ञानिकों की जीवनी कई बातें मैं जान गया,
पर एक बात तो अपनी अन्तरात्मा से मान गया।
कि जिसने की है मेहनत दिलोजान से,
वही पहुंचा है अपने मुकाम पे।

फागुन

श्रीमती अलका जैन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी

लिखने को तो हम लिख देते पाती तेरे नाम

लेकिन फिर मन माँग उठेगा एक फागुनी शाम

फागुन में पत्ते झरने पर, प्रेम भरा संगीत मिलेगा

कोयल गाए या ना गाए, कोयल वाला गीत मिलेगा

बिछुड़े सबके गीत मिलेगें, आने वाले सावन में

मोर नाचता हुआ मिलेगा, मेरे तेरे आँगन में

संज्ञाएँ सब खो जाएँगी, खो जाएँगे सर्वनाम

कई विशेषण अर्थों में फिर बेमानी हो जाएँगे

नई-नई मनुहारें होगी, नए-नए अनुबंधन होगें

कभी जलेंगे कभी तपेंगे, कभी-कभी हम चंदन होंगे

हमें देखकर चला करेंगी फिर मधुवंती भी अविराम

लिखने को तो हम लिख देंगे पाती तेरे नाम

संसार का सार है माँ

प्रतीक सैनी
बी.एससी. भाग-प्रथम
प्राणिशास्त्र

शब्दों के तराजू में तोलो तो एक छोटा-सा शब्द है माँ

लेकिन दुनिया की सारी ताकतों को अपने में समेटे

प्यार और दुलार की डोर को अपने में समेटे

इस संसार का सार है माँ

जगत के सारे रिश्तों का आधार है माँ

खुशियाँ हैं जिसके दम से वो है माँ

चहतों का खुला आसमाँ है माँ

जिन्दगी की रेखा की शुरूआत है माँ

कभी ना मिटने वाला अनमोल जज्बात माँ

एक बच्चे के लिए उसका संसार है माँ

जो कभी खत्म ना हो वो प्यार है माँ

नीति

संकलनकर्ता-डॉ. उमा बारैठ
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत

अहिंसा सत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभता ।
भूतप्रियहितेहा च धमोऽयं सार्ववार्णिकः।।
-श्रीमद्भागवत (११/१७/२१)

(अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अकाम, अक्रोध, अलोभ तथा सभी प्राणियों के प्रति हित की भावना ये सभी वर्णों के धर्म हैं ।)

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ।।
-मनुस्मृति ८/१५

(सत्य बोलें, प्रिय बोलें ! अप्रिय सत्य न बोलें , प्रिय होने पर भी असत्य न बोलें यही सनातन धर्म है ।)

सत्यमस्तेयमक्रोधः ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सर्व उदाहृतः।।
-याज्ञवल्क्य स्मृति

(सत्य, अस्तेय, अक्रोध, ह्री (लज्जा) शौच, धैर्य, दम (संयम) जितेन्द्रियत्व और विद्या -ये धर्म के लक्षण हैं ।)

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह : ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।
-याज्ञवल्क्य स्मृति (३/४/६६)

धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि विद्या, सत्य और अक्रोध -ये धर्म के दस लक्षण हैं।)

यस्य धर्मविहीनानि दिनान्यायान्ति यान्ति च ।
स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवती !!
-पंचतन्त्र (३/६३)

जिस पुरुष के दिन धर्मानुष्ठान के बिना ही व्यतीत होते हैं वह लुहार की धोंकनी के समान श्वास लेता हुआ भी जीवित नहीं है ।

विलियम्स शेक्सपीयर के वचन

संकलनकर्ता–विनिता सैन
बी.ए. भाग–प्रथम

- ❖ हम जानते हैं कि हम क्या हैं पर ये नहीं जानते कि क्या बन सकते हैं ।
- ❖ जिस श्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है ।
- ❖ ऐसा व्यक्ति जिसने कभी आशा नहीं की, वह कभी निराश नहीं होता है । हमेशा प्रसन्नता और सम्पन्नता से धिरा होता है ।
- ❖ मूर्ख व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान मानता है लेकिन बुद्धिमान व्यक्ति स्वयं को मूर्ख मानता है ।
- ❖ जीवन का उत्तम उपयोग है, इसे ऐसा कुछ करने में बिताना जो इससे अधिक स्थायी हो ।
- ❖ अपने जीवन में परिवर्तन करने के लिए तत्काल कार्य करना आरम्भ करें, ऐसा शानदार ढंग से करें, इसमें कोई अपवाद नहीं है ।
- ❖ जीवन का महानतम उपयोग इसे किन्हीं ऐसे अच्छे कार्यों पर व्यय करना है जो कि इसके जाने के बाद भी बने रहें ।
- ❖ मानव अपनी सोच की आंतरिक प्रवृत्ति को बदलकर अपने जीवन के बाह्य पहलुओं को बदल सकता है ।
- ❖ जिस पर तुम्हारा वश नहीं, उसके लिए दुख करना बन्द कर दो ।

उस पंछी की उड़ान में किलकारी तब तक थी
जब तक के मतिभ्रम आवाज ना आई।
आसमान से नीचे जमीन तलाशने लगा वो
अतिउत्साहित हो नीचे आया तो
मृगतृष्णा ना समझ पाया
देख हकीकत आडंबर की
खुद को उसने विचलित पाया
उड़ान भरनी चाही,
पर उसी मृगतृष्णा ने रोका फिर से
हतोत्साहित पंछी ने खुद को युं अकेला पाया

"पर पंछी उड़ेगा दोस्तो, क्युंकि जिंदगी
चलने का नाम है।"

पाखंडी जमीन मन विचलित ना कर सकी
पंछी बना ही उड़ने के लिए है
फिर जो आँख मूँद कर उड़ान भरी
जमीन देखती रह गई
उड़ान खुद के लिए जो थी
वो शौक पर भारी पड़ी थी।

शीर्षक - "हम पंछी"
नाम - प्रियंका जांगिड़
कक्षा - B.Sc. Part I अंग्रेजी
- यह मेरी स्वरचित कविता है।

उसकी आंखो की चमक कुछ कहना चाहती थी.
उसके होठों की हंसी कुछ बयाँ करना चाहती थी
वो चाहकर भी कुछ नहीं कह पाया
क्योंकि उसे डर था, कुछ आज का,
और कुछ कल का
पर दिल-ए-नादान कब तक युं होता
आखिर दिल की बात जुबा पर आ ही गई
पर वो शायद किस्मत को नामंजूर थी
जो दिल में अनकही बात दबा कर,
दूर चली गई।

शीर्षक - 'वो'
नाम - प्रियंका जांगिड़
कक्षा - B.Sc. Part I Biology
- यह मेरी स्वरचित कविता है।

"विद्यायाः महत्वम्"

वन्दना पारीक
संकलन कर्ता
एम० ए० पू० संस्कृत

रूपरेखा ⇒

1. प्रस्तावना
2. विद्यायाः महत्वम्
3. विद्यायाः लाभाः
4. उपसंहारः

1. **प्रस्तावना** :- ज्ञानार्थकाद् 'विद्' धातो विद्या शब्दः विद्यते। कस्यचिदपि वस्तुनो विषयस्य वा सम्यक् ज्ञानं विद्येत्यमिधीयते। वेदशास्त्र-विज्ञानादीनां साध्वनुशीलनम् तत्वार्थज्ञानं च विद्येति स्वीक्रियते।
उपनिषदाम् अनुसारं द्विविद्ये परा अपरा च। तत्र परा- वेदा वेदाङ्गानि च। परानया तद् अक्षरं अधिगम्यते। यथा लौकिकं ज्ञान जायते सा अपरा विद्या। यया च अक्षरब्रह्म विषयकं ज्ञानं जायते, सा परा विद्या।
विद्या कल्पलता मन्यते। यथा कल्पलता नरस्य सर्वान् अभिलाषान् पूरयति, तथैव विद्या अस्ति -

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते,
कान्तेव चाभिरयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥

2. **विद्यायाः महत्वम्** :- यद्यपि संसारे बहूनि वस्तूनि सन्ति, परन्तु विद्यैव सर्वश्रेष्ठ धनं अस्ति।
अतएव उच्यते - 'विद्याधनम् सर्वप्रधानम्'। विद्यया मनुष्यः स्वकीयं कर्त्तव्यं जानाति। विद्ययैव मनुष्यो जानाति यत् को धर्मः,

सरस्वती विद्याया अधिष्ठात्री देवी विद्यते। तस्याः कोशे एतद् धनम् अपूर्वम् एव। यदि कोऽपि नरः विद्यां संचेतुम् इच्छति, कस्यापि नरस्य अग्रे न प्रकाशयति, तदा स तां विस्मरति। तस्यः हानिः भवति। अतः नरः सर्वदा विद्यायाः प्रचार प्रसारं च कुर्यात्। विचित्रा एषा सूक्ति वर्तते -

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्॥

3. विद्यायाः लाभाः - विद्यैव जगति मनुष्यस्य उन्नतिं करोति। दुःखेषु विपत्तिषु च तस्य रक्षां करोति। विद्यैव कीर्त्तिं धनं च ददाति। विद्या वस्तुतः कल्पलता विद्यते। विद्यैव मनुष्यः सर्वत्र सम्मानं प्राप्नोति। राजानोऽपि तस्य पुरस्तात् नतशिरसो भवन्ति। विद्वांस एव संसारस्य दुःखानि दूरीकुर्वन्ति। त एव उपदेशका विचारका ऋषयो महर्षयो मंत्रिणो नेतारश्च भवन्ति। विद्वांस एव विविधान् अविष्कारान् कृत्वा संसारस्य श्रियं वर्धयन्ति, लोकान् च सुखिनः कुर्वन्ति।

विद्या पठित्वा नरः विविधान् अविष्कारान् कृत्वा संसारस्य कीर्त्तिं प्राप्नोति। चतुर्वर्गस्य फलप्राप्तिरपि सुखपूर्वकं विद्या एव सम्भवति। अद्य वयं वैज्ञानिक युगे निवसामः। वर्तमानयुगे वैज्ञानिकीम् उन्नतिं कुर्वन्ति।

विद्या नम्रता ददाति, यया पुरुषः पात्रता प्राप्नोति। तस्मात् धनं लभते। इत्थं पुरुषार्थचतुष्टयस्य मध्ये प्रथमो वर्गः धनरूपः अर्थः विद्यया प्राप्यते। अनेन धनेन नरः दानं ददाति। धर्मशाला निर्माणं मन्दिराणां जीर्णोद्धारं तीर्थाटनं देव-पितृ-पूजनादिकं पुण्यं कर्म च करोति। फलस्वरूपं स धर्मसंचयं करोति।

इमं दृष्ट्वा कोऽपि कविः कथयति-

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मस्ततः सुखम् ॥

विद्यया एव कालिदास - भवभूति - जयदेवादयो महाकवयः अमरत्वं प्राप्नुवन् । तेषां कोमलकान्तपदावली साम्प्रतम् अपि सहृदयानां कर्णकुहरेषु सुधाधारा वर्षति । अधुना अपि वाल्मीकेः वेदव्यासस्य च भारती लीलायते । तुलसीदासमहाभागस्य भाषभणितम् अद्यापि भक्तिगंगा प्रवाहयति ।

अतः 'विद्ययामृतंऽश्नुते' आभाणकं सत्यं प्रतीयते । विद्याबलेन एव नरः अज्ञातदेशेऽपि गच्छति । अनेन कोलम्बस महोदयः अमेरिकायाः अन्वेषणम् अकरोत् । वायुयान - चालकाः निराधारे आकाशमार्गे यत् स्व वायुयानं चालयन्ति, तदपि विद्याबलस्य एव प्रभावः । ये सीमारहिते समुद्रेऽपि पोतं चालयन्ति । तेऽपि पोतविद्यया एव तत्कार्यम् संपादयन्ति । अतः विद्या मनुष्यस्य शोभा विस्तारयति ।

4. उपसंहारः - अस्माकं लोके इतिहासे च अनेकाः दृष्टान्ताः सन्ति ये विद्यायाः महत्वं सूचयन्ति ।
सुकरात - न्यूटन महोदयाः अपि विद्याबलेन एव संसारे पूजां लभंते ।
अनया विद्यया प्रेरितः नरः हितकार्यं करोति अहितं च त्यज्यति ।
गीतायाम् उक्तम् श्रीकृष्णेन -

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।'

पावनत्वं गुणोत्कर्षादेव विद्या देववत् पूज्यते आद्रियते च ।
सा देववत् पन्थानम् प्रथयति, मार्गं मार्गयति, मेधां समेधयति, बुद्धिं प्रबोधयति, स्वान्तं संस्कुरुते, वैभवम् आविर्भावयति च ।
अतएवेयम् - परम् दैवतम् परा देवता वाङ्मिधीयते ।
विद्यैव ज्ञानावाप्ति साधनम् ।
एतदेवाऽभिप्रेत्य च प्रोच्यते - ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।

कोऽधर्मः, किं कर्त्तव्यम्, किम् अकर्त्तव्यम्, किं पुण्यम्, किं पापम्, किं कृत्वा लाभो भविष्यति, केन कार्येण वा हानिः भविष्यति। स विद्याप्राप्त्या सन्मार्गम् अनुवर्तितुम् प्रयतते। एवं विद्ययैव मनुष्यो मनुष्योऽस्ति। यो मनुष्यो विद्याहीनोऽस्ति स कर्त्तव्याकर्तव्यस्य अज्ञानाद् पशुवत् आचरति, अतः स पशुरित्यभिधीयते।

'विद्याविहीनः पशुः' इति।

अस्मिन् समये विद्यायाः अतिमहत्वं वर्तते। विद्याविहीनस्तु मानवः साक्षाद् पशुरेव। यतो हि विद्यैव तद् ज्योतिः यद् मानवे ज्ञानज्योतिः ज्वलयति, दुर्गुणगणं वारयति, कीर्तिं प्रथयति, गौरवं विकासयति, यशो वितनोति, नृपेषु च आदरं आवहति।

सुष्ठु उक्तं भर्तृहरिणा–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्यागुरूणां गुरूः।
विद्याबन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

विद्यायाः जीवने अत्यधिकं महत्वाः सन्ति। सा मानवस्य किं किं न साधयति? तस्या स्थितिस्तु कल्पलतेव विद्यते, तद्वत् सा सर्वसुख साधिका सर्वगुणप्रदा, सर्वाभीष्टसंधात्री च सैषा मातृवत् अस्माकं संरक्षिका, पितृवत्सत्पथदर्शिका, कान्तावत् सुखदा मनोरञ्जिका च।

सर्वमनोरथपूर्णात् सैयं कल्पलतया उपमीयते।

किम् नाम विद्याया लक्ष्यमिति विविच्यते चेत् तर्हि विद्यायाः परमं लक्ष्यं मुक्तिप्राप्ति अस्ति।

यदि न स्यात् विद्या मुक्ते साधनं तर्हि तदवाप्तिरपि न श्रेयसे न च सुखाय स्तात्। यया मोक्षाधिगमः सैवविद्या। उपनिषत्सु सैव पराविद्येति प्रकीर्त्यते अतएव भूयो भूयो निर्दिश्यते–

'सा विद्या या विमुक्तये'।

संकलन कर्त्ता → मोनिका पारीक
एम. ए. पू. संस्कृत

छात्राणां कर्त्तव्यानि

पुराकाले भारतवर्षे आश्रमव्यवस्था प्रचलति स्म। व्यवस्थायामस्यां ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-सन्यासाश्रमेषु प्रथमो ब्रह्मचर्याश्रमः। जन्मतः पंचविंशतिवर्षपर्यन्तमाश्रमस्यास्य स्थितिः। इत्थं ब्रह्मचर्याश्रम काल एव विद्यार्जनकालः। छात्राः गुरुं देवमिव मत्वा तस्याज्ञां पालयन्ति स्म। योगेश्वरः कृष्णो अपि स्वगुरवे काष्ठान्यानयत्। उद्दालको गुरुवचनं अनुसृत्य केदारक्षेत्रे जलावरोधने अक्षमो भूत्वा स्वात्मानमेव तत्र स्थापितवान्। इत्थमनेकान्युदाहरणानि।

वर्तमानकाले छात्राः सुखम् अभिलषन्तो नैव परिश्रमं कुर्वान्ति न वा अनुशासनमेव पालयन्ति। येन केन अपि अभिभावकाः विविधानि क्लेशानि सोढ्वा स्वपुत्राणां कृते अध्ययनव्यवस्थां कुर्वन्ति परं न ते पुत्राः पितुः क्लेशं विचारयन्ति न वा गृहस्थ्य दशाम्। पाश्चात्य परम्पराणाम् अंधानुकरणे दक्षास्ते वेषभूषायां बहुधनापहारं कुर्वन्तो निरतिशयेनाधुनिका भवितुम् अर्हन्ति।

परंतु सत्यम एव यत विद्यार्थीजीवनं तु तपास्विजीवनमेव। नहि अत्र सुखाभिलाषा। चेत् काश्चित सुखार्थी न तस्य भाग्ये विद्येति मन्तव्यत अत एवोक्तम्-

सुखार्थी चेत् त्यजेत् विद्यां
विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्
सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतो सुखम्॥

धनार्थिनांकृते यथा कणस्य महत्वं तथैव विद्यार्थिनां कृते क्षणस्य महत्वम् इति।

विद्यार्थिजीवने ब्रम्हचर्यव्रतपालनम् अति आवश्यकम्। सर्वाणि कार्याणि समये एव सम्पादनीयानी नियमितो व्यायामः, नियामितं भोजनं, नियमिता निद्रा, नियमेन अध्ययनं मननं निदिध्यासनं, नियमेन गुरुसेवा, सत्यभाषणं सदाचारः गुरुतरतामस भोजनं परित्यागः, विनयपरिपालनं च विद्यार्थिनां सामान्य कर्त्तव्यानि।
प्राचीन काले छात्राणां कर्त्तव्यानि निर्दिशता केनचित् कविना विद्यार्थिलक्षणं कृतं यथा–

काकचेष्टा बकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्॥

विद्यया नैतिकगुण परिपूर्ण छात्राः भाविजीवने सर्वविधक्षेत्रेषु समुन्नतिं कुर्वन्तः स्वहितेन सदैव राष्ट्रहितं साधयन्ति, परमार्थं च साधयन्ति।

भावना यादव
एम॰ए॰ उ॰ संस्कृत
संकलन कर्त्री

अनुष्टुप् -

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजेगजे
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनम् न वने वने ॥

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः
गुरूसाक्षाद् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्व कर्मणाम् ।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते ॥

अनाहूतो प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः॥

मंदाक्रान्ता -

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानिम्गम्यं
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।

शार्दूल -

या कुन्देन्दुतुषारहारधवलाया शुभवस्त्रावृत्ता:
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्मच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वान्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शार्दूलविक्रीडित

विद्यानामनरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नं गुप्तधनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बंधुजनो विदेश गमने, विद्या परं दैवतम्
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं, विद्या विहीनः पशुः॥

शिखरिणी -

यदा लोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृत संधानमिवतत्।
प्रकृत्या यद् वक्रं तदपि सम रेखं नयनयो
र्नमेदूरे किंचित् क्षणमपि न पार्श्वे रथ जवात्॥

मैं विज्ञान हूँ

मैं विज्ञान हूँ, विविधता का ज्ञान हूँ
प्रकृति है मुझमें समायी, फिर भी मैं अज्ञान हूँ
खोजें मेरी होती महान, जिनको पढ़ती दुनिया जहान
स्टीफन हॉकिंग का ब्रह्माण्ड हूँ, आँखों में कॉर्निया के समान हूँ ॥

रंग बिरंगे हैं नजारे मेरे, दिन में भी चमकते हैं तारे मेरे।
डॉर्विन का सिद्धान्त हूँ, पूरी प्रकृति का वृतान्त हूँ
ह्यूगो-डी-व्रिज का उत्परिवर्तनवाद
जो हर पल आता है मुझे याद ।

सूर्य से अन्य ग्रहों की दूरी, समायी है मुझमे पूरी की पूरी
ठोस, गैस और द्रव की बोटल, रदरफोर्ड का परमाणु मॉडल
अद्वितीय मेरा संसार है, विविधता मुझमें हजार है।
बिग बैंग थ्योरी। जो बताती है शुरूआत तोरी

आनुवंशिकी के जनक थे मेंडल, फिंगर प्रिंटिंग टेकनिक को भी किया मैंने हैंडल।
न्यूटन के नियम है सबसे हटके। जिनको पढ़कर खाते तुम झटके
विलियम हार्वे का परिसंचरण तंत्र हूँ
दिल की धड़कन सुन सको ऐसा एक यंत्र हूँ

फिर भी न जाने कितने हैं नियम, ऑक्सीजन के बिना कैसे जिए हम
जब-जब लगा थोड़ी कमी है मुझमें, खोज की आशा जगी है तुझमें

फिर से कहता हूँ तुझे, भूलना मत मुझे
मै विज्ञान हूँ। विविधता का ज्ञान हूँ
प्रकृति है मुझमे समायी। फिर भी मैं अज्ञान हूँ

नाम - राधिका शर्मा
कक्षा - B.SC II year (Bio)

स्टीफेन हाकिंग

डॉ. अलका पारीक

एसोसिएट प्रोफेसर

प्राणिशास्त्र

स्टीफेन हाकिंग तेरा जवाब नहीं

मानव था तू कोई ख़्वाब नहीं

गृहणी माता पिता डॉक्टर

नौ जनवरी को ऑक्सफोर्ड में जन्मा

घड़ियों से खेला करता था

भौतिकी पढ़ता था

सत्रह साल की उम्र में तुमने ऑक्सफोर्ड में की पढ़ाई

भौतिकी में होते हुए भी गणित में भी रुचि दिखाई

इक्कीस वर्ष की आयु में

गंभीर बीमारी से ग्रसित पाया

चिकित्सकों ने तुमको

मात्र दो वर्ष जीओगे बतलाया

तंत्रिका तंत्र की यह बीमारी धीरे धीरे आती है

देह के सारे अंगों को निष्क्रिय कर जाती है

जीने की प्रबल इच्छा के बल

अपंगता को भी ठुकराया

जेन से शादी कर

पिता बना और प्यार लुटाया

मगर शरीर की विकलांगता धीरे धीरे बढ़ती जाती थी

पैरों से चलने वाले को अब व्हील चेयर चलाती थी

शरीर की अक्षमता को

उसने अपना कवच बनाया

दिमाग की सारी ऊर्जा समेट

ब्रह्माण्ड की ख़ोज में लगाया

ब्लैक होल पर ख़ोज की और बिग बैंग थ्योरी को समझाया

मौत से डरना नहीं

मौत तो इक दिन आयेगी

जीवन और मृत्यु के बीच

कैसे जीना है सिखलाया

कर्म का सिद्धान्त प्रबल है उत्सुक हो करते जाओ

जीने का मकसद होगा तो प्यार के बल जीते जाओ

राह में रुकावट तब आई

जब जेन ने शादी तोड़ी

सेवा करने वाली इलियाना से फ़िर उसने बनाई अपनी जोड़ी

बालक सा उत्सुक रहता था

क्यूँ और कैसे प्रश्न करता था

महान विचारों को अपने

सरल भाषा में लिखता था

सारा शरीर जब रुक गया

कंप्यूटर से वो जुड़ गया

लेकिन विश्वास डिगा नहीं

महान वैज्ञानिक फिर भी मरा नहीं

प्रबल इच्छा के बल पर उसने लंबी उम्र पाई

अपनी खोजों से सर्वोच्च सम्मानों की झड़ी लगाई

नज़रों और दिमाग से

उसने इतिहास रचाया

अपंगता नहीं बनी रुकावट

वह मृत्युंजय कहलाया

स्टीफेन हाकिंग तेरा जवाब नहीं

मानव था तू कोई ख़्वाब नहीं...